International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-4 July-August- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जीवन की अन्तिम यात्रा

दाह संस्कार –उत्तराखण्ड की रं जनजाति के विशेष संदर्भ में

डा0 दिनेश

असिस्टेंट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

राजकीय महाविद्यालय कोटाबाग (नैनीताल) उत्तराखण्ड।

संक्षेपः
जीवन एवं मृत्यु, मानो एक सिक्के के दो पहलू। जीवन है तो उसका अन्त भी निश्चित ही है। आध्यामवाद की माने तो जीवन से पहले ही उसका अन्त तय हो जाता है। जीवित रहते हुए मनुष्य अपने सभी संस्कारों को सम्पन्न करता है, यही ऐसा संस्कार है जो उसकी मृत्यु के पश्चात उसके सगे – सम्बन्धियों द्वारा कराया जाता है। यह संस्कार किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय मात्र का नहीं है, हॉ इसे सम्पन्न कराने के तरीकों में भिन्नता देखी जा सकती है। हिन्दु सम्प्रदाय में मृत्यु पश्चात दाह संस्कार की प्रथा है तो मुस्लिम एवं इसाई सम्प्रदाय में दफनाने की। वस्तुतः सभी सम्प्रदायों में इसकी प्रक्रिया उनकी संस्कृति का अंग है, और पहचान भी। प्रस्तुत शोध पत्र में हम रं जनजाति में इस संस्कार के की प्रक्रिया एवं प्रकार्यात्मक महत्व को समझेंगे।

संकेतकः रं जनजाति, ग्वन, रह्म चंम,।

प्रस्तावनाः

जनजातीय समुदाय अपनी विशेष संस्कृति के लिए ही जाने जाते है। प्रत्येक जनजाति समुदाय की अपनी पृथक सांस्कृतिक विरासत होती है। जीवन पथ के सभी संस्कार वहां विशेष प्रकार से सम्पन्न किये जाते हैं चाहे वो जन्म की खुशी हो या अन्तिम यात्रा की तैयारियां। मृत्य से परे वे भी नहीं।

उत्तराखण्ड की रं जनजाति भी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के लिए जानी जाती है। यहां जीवन पथ के विभिन्न संस्कार देखते ही बनते हैं। अपने विशिष्ट पहनावे एवं नृत्य के लिए रं समुदाय क्षेत्र में अलग स्थान रखता है। अन्य समाजों के लिए रं समुदाय सदैव ही कौतुहल

का विषय रहा है। इसके विभिन्न संस्कारों, समारोहों में अन्य समाज के व्यक्तियों की उत्सुकता एवं खुशी देखते ही बनती है। विभिन्न संस्कारों की भांति जीवन की अन्तिम यात्रा भी यहां विशिष्ट एवं भिन्न है। यहां व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसके शव का दाह संस्कार किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में रं समुदाय में किये जाने वाले दाह संस्कार की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र में अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया है, साथ ही प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से इसे और गहराई से समझने का प्रयास किया गया है।

अन्तिम यात्रा

भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य के पिथौरागढ जिले की धारचूला तहसील में आवासित रं समुदाय में मनुष्य की मृत्यु के पश्चात उसे तुरन्त ही भूमि पर लम्बा लिटा दिया जाता है। भूमि में लिटाने से तात्पर्य है कि व्यक्ति का जन्म मिट्टी में हुआ और मिट्टी में ही मिल जाना है। उसे एक चादर से ढक दिया जाता है। शव के सिर की ओर एक दिया जला दिया जाता है जो अन्तिम संस्कार (ग्वन/श्राद) के पूर्ण होने तक जलता रहता है। यहां दिया जलाने से तात्पर्य है कि मृत्यु के पश्चात मनुष्य की आत्मा अन्धरे में न भटके, उसे दिये के प्रकाश से रौशनी मिलती रहे। तत्पश्चात दुःखद सन्देश सभी ग्राम वासियों, सगे सम्बन्धियों को दे दिया जाता है। सभी ग्रामवासी एवं मित्रगण वहां पहुॅच मृतक के परिवार को सांत्वना देते हैं एवं दाह संस्कार की तैयारियों में जुट जाते हैं। यदि मृत्यु रात्री के समय हुई हो तो सभी लोग रात भर शव के पास बैठते हैं एवं समय बिताने के लिए किस्से कहानियां आदि सुनाते हैं। रात में सभी एक साथ नहीं सोते, कहावत है कि मृत आत्मा रात में व्यक्तियों को गिनती है यदि सभी सोये हो तो आत्मा किसी के शरीर में भी प्रवेश कर सकती है जो कि अशुभ संकेत है। प्रातः शव को स्नान कराने हेतु एक परात *(यदि तांबे का हो तो उत्तम अन्यथा पीतल का भी हो सकता है।)* में एक लोटा या जग पानी डालकर उसमें सोना, चॉदी व कैलाश मानसरोवर अथवा गंगा जल मिला लिया जाता है। इस मिश्रण को **रहाती** कहा जाता है, अर्थात शुद्ध जल। अब मृतक के घर का बेटा अथवा सगे भाई बन्धु मृतक के कपडे उतारते हैं। कपडे उतारने में कठिनाई होने

पर कपडा कैंची द्वारा काटा भी जा सकता है। अब तैयार शुद्ध जल ठूती से शव का सिर, बदन एवं मुँह धो दिया जाता है। यदि मृतक अविवाहित कन्या हो तो उसके भाई, बेटे व पिता कपडे बदलने एवं नहलाने का कार्य नहीं करेंगे न ही शव को कंधा देंगे दाह संस्कार में भी वे चिता बनाने का कार्य नहीं करते। ऐसे अवसरों पर गांव की औरतें या अन्य रिश्तेदार ही यह कार्य करती हैं। किसी रूमाल द्वारा पोंछ कर बदन, मुँह एवं सिर में घी लगा दिया जाता है। शव को ढकने के लिये लगभग साढे चार–पांच मीटर श्वेत कपडा कफन (कात्रो) के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। कपडे को सिलने हेतु पर्याप्त सफेद रंग के ऊनी धागे को उल्टा बंटा जाता है। यदि धागा शेष रह जाये तो उसे कात्रो में ही डाल दिया जाता है। कात्रो को बोरी के समान एक विशेष प्रकार से सिला जाता है जिसे रं बोली में दंग्फन कहा जाता है। मृतक का मुँह ढकने के लिये कात्रो के एक सिरे में आधा मीटर कपडा छोड दिया जाता है, ताकि कात्रो में शव को डालने के बाद उसका मुँह ढक कर सिला जा सके। कात्रो पहना कर शव को पुनः भूमि पर लिटा दिया जाता है। *इसी समय ही घर के अन्दर मृत आत्मा के लिये अन्तिम भोज (* ***स्यि छाकू*** *) तैयार किया जाता है जिसमें चावल एवं दाल बनाई जाती है।*

शव को नहलाने के साथ ही गांव के लोग बाहर आंगन में डांडी (शव सैय्या) का निर्माण भी कर लेते हैं। डांडी के निर्माण के लिए 8–9 फिट के दो बॉस अथवा भोजपत्र के डंडे एवं साथ ही 3 फिट की लम्बाईवाले 14 या 18 छोट–छोटे डंडे जिन्हें ***रंसिन*** कहा जाता है, तैयार किये जाते हैं। दोनों लम्बी डंडियों को रस्सी से छोटी डंडियों के सहारे इस तरह बांधा जाता है कि छोटी डंडी का एक सिरा एक लम्बी डंडी के ऊपर एवं एक सिरा नीचे जाये दो रंसिन को एक साथ दोनो ओर से बांधा जाता है। इस प्रकार 7 या 9 सीढी से डांडी का निर्माण हो जाता है। डांडी का निर्माण हो जाने के पश्चात उसके ऊपर कालीन बिछा दिया जाता है। अब घर से शव को किसी चादर में लपेटकर बाहर लाया जाता है। शव के साथ ही **अक्चा** (सोना, चांदी, मूंगा अथवा मोती अर्थात शुद्ध धातु) लाया जाता है जो शमशान में शव के मुँह में डाला जाता है। अक्चा देने से तात्पर्य है कि मृतक अब इस संसार से बिदा ले रहा है तो उसे उसका हिस्सा दिया जाये। शव को डांडी पर रख कर उसे मृतक के कपडे एवं अन्य सुंदर से

कपडे से ढक कर एक रस्सी से बांध दिया जाता है ताकि शव रास्ते में गिरे नहीं। यदि मृतक पुरुष हो तो उसके सिर की ओर ब्यंढलो (पगडी) स्त्री हो तो साडी अथवा क्षा बॉध दिया जाता है इसे **अम्** कहा जाता है। *(क्षा एक विशेष प्रकार का ऊनी धागे से तैयार कपडा होता है जिसे महिलायें अपना थैला बनाने में प्रयोग करती हैं)।* रं बोली में अम् का तात्पर्य रास्ते से है। यहां इसे बांधने का अर्थ है मृत आत्मा को रास्ता दिखना। साथ ही शव को श्रीफी (याक की पूंछ से बनी रस्सी)से भी बांध दिया जाता है ताकि मृतक की आत्मा के साथ बुरी आत्मायें न जायें। शव यात्रा से पहले एक कन्या तसले अथवा कडाही में जलती हुई लकडियां लेकर चलती है जिससे शव दाह किया जाना है । उस बर्तन को पकडने के लिये गीले बोरी का प्रयोग किया जाता है ताकि हाथ न जले। उसके साथ ही कुछ कन्यायें मृतक के लिये बनाया गया भोजन लेकर जाती हैं जिसमें चावल, दाल, च्यक्ति, दूध, चाय एवं फल आदि हाते हैं। उसके पीछे मृतक की बहने, बेटियां एवं गांव की कन्यायें शव में बांधे गये अम् को सर में रख कर लाइन बना कर बिलाप करती हुई चलती हैं। डांडी का अगले सिरों को सगा भाई, बेटे अथवा रिस्तेदार उठाते हैं। जबकि पिछले भाग को अन्य रिस्ते—नातेदार एवं गांव वाले उठाते हैं। मृतक के बेटे नंगे पांव चलते हैं, यह उनकी ओर से अपने माता पिता को श्रद्धान्जली होती है। मार्ग में अन्य लोग बारी— बारी से बदलते रहते हैं। शव के पीछे मृतक का दामाद अथवा अन्य **फ्रो** (**बर्की**) लेकर चलता है व डांडी पर छिडकता रहता है। शमशान पहुंचकर डांडी को भूमी पर रख दिया जाता है। अब चिता के निर्माण हेतु मृतक का पुत्र अथवा परिवार का पुरुष सदस्य सर्वप्रथम एक पत्थर रखकर नींव डालता है तत्पश्चात अनुभवी लोग चिता के निर्माण में लग जाते हैं। चिता के निर्माण के लिये गोल घेरे में पत्थरों की दीवार बनायी जाती है, जिसके बीच में लकडियां डाली जाती हैं, घेरे को नदी की ओर खुला रख जाता है जो चिता का दरवाजा है। ताकि चिता को हवा लगती रहे ओर अग्न ठीक से जले । ***यहां यह बताना आवश्यक है की चिता में प्रयुक्त लकडियां घर से एवं गांव के प्रत्येक परिवार एवं उपस्थित समस्त संबंधियों द्वारा लायी जाती हैं।*** यह रं जनजाति की विशेषता है कि प्रत्येक शुभ अशुभ कार्य में सब की सहभागिता होती है। चिता का निर्माण कार्य पूर्ण हो जाने के पश्चात डांडी को

चिता पर रख कर उस पर बांधी गयी रस्सी खोल दी जाती है। इस रस्सी को वापस घर लाया जाता है जिसका कि ग्वन के समय महत्व है। श्रीफी एवं शव पर लपेटा गया सुंदर कपडा हटा लिया जाता है इन्हे भी बाद में घर लाया जाता है। डांडी बनाने के लिये बांधी गयी रस्सी कुल्हाडी से काट दी जाती है। डांडी के लम्बे डंडों को नदी में फेंक दिया जाता है। परिवार का व्यक्ति अथवा रिस्तेदार शव के मुॅह में घर से लाया गया अक्चा डालता है तत्पश्चात उपस्थित सभी लोग अक्चा के रूप में सिक्के शव के मुॅह में डालने हेतु उस व्यक्ति को देते हैं। उसके उपरान्त शव पर घी एवं तेल छिडका जाता है, गुड काटकर शव पर जगह – जगह रख दिया जाता है जिससे आग पकड सके। अगरबत्तियां जलाकर शव के चारों ओर रख दी जाती हैं। लकडियों में मिट्टी का तेल छिडका जाता है ताकि ठीक से जल सके। लाया गया भोजन चिता में एक स्थान पर रख दिया जाता है। अन्त में मृतक का पुत्र अथवा परिवार का अन्य पुरुष सदस्य शव को अग्नि देता है। सभी लोग जलती चिता पर नदी का जल छिडकते हैं एवं नदी में हाथ मुॅह धोकर मृतक के घर वापस पहॅुचते हैं। जिस व्यक्ति ने शव को स्नान कराया हो अथवा मुॅह में अक्चा दिया हो वह नदी में ही स्नान कर वापस आता है।

यहां घर के आंगन में तसले अथवा परात में पमा (धूप) जलाकर महिलायें मलामियों (दाह संस्कार में सम्मिलित लोगों) को मदिरा, धूम्रपान एवं सुपारी का सेवन कराती हैं एवं भीतर बैठने का निवेदन करती हैं। सभी मलामी धूप को अपने बदन पर लेकर शरीर शुद्ध करते हैं व भीतर बैठते हैं। मृतक के परिवार को सांत्वनायें दी जाती हैं। बुजुर्ग आगे के कार्यों के संबंध में वार्ता करते हैं। मृत्यु के तीसरे दिन रह्म चंम (मृतक को प्रथम भोजन देने का कार्य) करना तय किया जाता हैं।

रह्म चंम

रह्म चंम से तात्पर्य है मृत आत्मा को दाह संस्कार के पश्चात प्रथम बार भोजन देने की प्रथा। इस दिन सुबह ही गांव के लोग मृतक के घर पहुच जाते हैं। लगभग 3 बडे बर्तनों में चावल पकाया जाता है। आटे को तेल में भून कर उसमे पानी डालकर झोली बनाया जाता है उसमें

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-4 July-August- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

कसी हुई सूखी मूली एवं नमक मिर्च मात्र डाला जात है। झोली में ना ही जुम्बू, हल्दी ना ही मसाला डाला जाता है। झोली बिल्कुल सादी बनाई जाती है। *सम्पूर्ण ज्युंग ब्यंखु में रहम चंम संस्कार में मात्र इसी में समानता है।* साथ ही घर के भीतर थोडा सा चावल बना लिया जाता है।

इसके उपरान्त कुछ लोग अस्थि एकत्रित करने हेतु शमशान की आर जाते हैं। अस्थि एकत्रित करने जाने हेतु कोई हथियार अथवा बन्दूक ले जाते हैं ताकि बुरी आत्मायें दूर रहें। अस्थि रखने हेतु डिब्बा, डिब्बा बॉधने के लिये खग (चौकोर धजा), सफेद पछिरा, धजा एवं अक्षत लेकर जाते हैं। साथ ही चिता धोने के लिये बाल्टी, जग एवं एक लोटा भी ले जाया जाता है। शमशान में पहुॅचकर दूर से ही बंदूक से गोली दागी जाती है एवं चिता में एक दो पत्थर फेंका जाता है ताकि यदि वहां कोई पशु–पक्षी हो तो भाग जाये जिससे अचानक उन्हें देखकर कोई डरे नहीं। तब किसी हरी टहनी का चिमटा बनाकर अस्थियों को डिब्बे में रखा जाता है। अक्चा में दिया गया सोने, चॉदी का टुकडा मिल जाय तो लेकर आते हैं माना जाता है कि इसका ताबीज बनाकर पहनाने पर बच्चों को डर नहीं लगता। ग्वन के समय याक के सिंग की स्वांपी बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता हैं। अस्थियां बटोरने के पश्चात चिता को गिरा दिया जाता है। क्योंकि यह अशुभ कार्य था एवं पूर्ण हो चुका है। चिता पर पानी डाला जाता है जिससे कि राख नदी में बह जाये। तत्पश्चात अस्थियां रखे डिब्बे को लाये गये सफेद धजा से बॉध दिया जाता है। डिब्बे को मृतक का दामाद अथवा परिवार का पुरुष सदस्य पीठ में लादता है, उसमें रूची नचै (एक प्रकार का कॉटा) लगा दिया जाता है ताकि अस्थि पर बुरी आत्माओं की नजर न लगे साथ ही हाथ में हथियार पकडकर वापस आते हैं। **कंपाटू** (अस्थियां रखने का विशेष स्थान) पहुॅचकर वहॉ एक खड्डा बनाया जाता है उसमें अस्थि का डब्बा रखकर पत्थरों से ढक दिया जाता है। उसके चारों ओर रिंगाल के 4 सीख खडे कर उसमें यदि मृतक पुरुष हो तो सफेद धागा एवं स्त्री हो तो रंगबिरंगे धागे को तीन चक्कर लपेट दिया जाता है। यह इस करण क्योंकि पुरुष का पहनावा रंगा सफेद रंग का एवं स्त्री का पहनावा च्युंगबाला रंगबिरंगा होता है। अस्थि रखने से पूर्व वहां के भूमि को एक जोली धजा दिया जाता है और

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-4 July-August- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

प्रार्थना कि जाती है कि " हे भूमि देवता हम यह अमानत यहॉ रख रहे हैं इसकी रक्षा कीजियेगा समय आने पर हम इसे ले जायेंगे " एक डण्डा बीच में तिरछा खडा कर उसके सहारे से एक **पारे** (लकडी का बोतलुमा बर्तन) अथवा क्वन्ती (गोल गर्दनदार सूखी लौकी) के तले में सूई के बराबर छेद कर पानी से भर कर लटका दिया जाता है। ताकि बूॅद–बूॅद कर पानी अस्थि पर टपकता रहे। जिससे कि मृत आत्मा को पानी मिलता रहे। साथ ही उस जगह पर एक लकडी तिरछी रख कर उसमें यदि मृतक पुरुष हो तो जूता, स्त्री हो तो बप्च लटका दिया जाता है। ताकि किसी कि बुरी नजर मृतक की आत्मा को न लगे। अब कंपाटू से घर की ओर आते समय रूची नचै की एक टहनी लेकर आते हैं। एक व्यक्ति गॉव के पनघट में जाकर उसके नजदीक किसी पत्थर के ऊपर तीन पत्थर रखकर उन पर उल्टे हाथ से पानी डालता है। उसके उपरान्त उसी लोटे में पानी भरकर लाया जाता है। यहॉ तीन पत्थर से तात्पर्य है पहला पत्थर पुराने पित्रों के लिए दूसरा पत्थर वर्तमान पित्रों के लिए एवं तीसरा पत्थर मृत आत्मा के लिए। व्यक्तियों के घर पहुॅचने पर कंपाटू से लाये गये नचै एवं एक पल्टा राख को किसी स्त्री द्वारा रह्म चंम हेतु बनाये गये भोजन के चारों ओर घुमा कर किसी चौराहे/तिराहे पर यह कह कर फेंक दिया जाता है कि मृतक की जान लेने वाले को नचै एवं राख के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।

अब रह्म चंम का कार्य आरम्भ किया जाता है। दामाद तीन टहनी वाली लकडी लाता है। अब उस लकडी को घर के बाहर ही अपनी जमीन पर इस प्रकार गाड दिया जाता है कि उसकी तीनों टहनियां ऊपर की ओर हों, उन टहनियों पर एक स्यंग (सापाट स्लेट पत्थर) रख दिया जाता है। घर के भीतर बनाये गये भोजन से पुराने पित्रों को यह कह कर पूजा जाता है कि आज जो भी खाना दिया जा रहा है वह नये मृत आत्मा के लिये है, आप लोगों का अन्तिम संस्कार विधि पूर्वक किया गया है अतः कृपया आज के भोजन को उससे न छीनें। घर के भीतर बनाये गये चावल को केवल परिवार के लोग ही खाते है। अब घर की स्त्रियां बाहर बनाये गये भोजन को सबसे पहले परोसकर लाती हैं, स्यंग को पनघट से लाये गये पानी से धोया जाता है। सभी स्त्रियां विलाप करती हुई भोजन को स्यंग पर रखती हैं, यह मृत आत्मा

के लिये पहला भोजन हैं उसके पश्चात श्राद्ध अथवा ग्वन होने तक प्रतिदिन नाश्ते, भोजन आदि के समय उस स्यंग में भोजन पदार्थ रखा जाता है। पनघट में रखे तीन पत्थरों में भी श्राद्ध अथवा ग्वन होने तक प्रतिदिन सुबह – शाम पानी डालने का क्रम जारी रहता है। इसके पश्चात उपस्थित सभी मलामियों को भोजन कराया जाता है व मृत आत्मा के किर्याक्रम का दिन निश्चित किया जाता है। बनाये गये चावल के पिण्ड बनाये जाते हैं व गांव के प्रत्येक परिवार के घर के दरवाजे पर दो–दो दाने रख दिये जाते हैं यह कार्य कन्याओं द्वारा किया जाता है। इस प्रथा में विभिन्न गांवों में भिन्नता देखी जा सकती है।

रं जनजाति अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए जानी जाती है एवं वही विशिष्टता दाह संस्कार में भी देखी जाती है। रं जनजाति में दाह संस्कार के पश्चात अन्तिम संस्कार के रूप में ग्वन संस्कार किया जाता है। ग्वन संस्कार स्वयं में एक विशिष्ट संस्कार है जो सम्पूर्ण रं संस्कृति को प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र के निश्कर्ष फल्स्वरूप यही कहा जा सकता है कि प्रत्येक जनजातीय समुदाय की अपनी पृथक विशेषतायें होती हैं जो कि उन्हें अन्य से भिन्न बनाती है। जीवन मृत्यु हर समाज हर समुदाय में एक समान है। यहॉ जीवन के अनेक पहलुओं एवं प्रथा –परम्पराओं को आज भी सहेज कर रखा गया है। वर्तमान के इस भौतिक वादी युग में अपनी परम्पराओं से जुडे रहना इसे पृथक बनाता है।

सन्दर्भ सूचीः

रायपा रतन सिंह 1974 शौकाः सीमवर्ती जनजाति, रायपा ब्रदर्स, धारचूला।

बिष्ट बी0 एस0 1992 उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, विवेकप्रकाशन नई दिल्ली।

व्यास दिनेश 2002 पश्चिमी नेपाल की शोका जनजाति का सामाजिक मानवशास्त्रिय अध्ययन, शोध प्रबन्ध, कुमॉऊ विश्वविद्यालय नैनीताल।

डा0 दिनेश व्यास
मो0 7579051745
email- dineshvyasphd@gmail.com